4

व्यवस्था के अधीन आराधना, 2

(सुलैमान से मलाकी तक)

इस्राएल के साथ बान्धी गई परमेश्वर की वाचा में कहा गया था कि वह किसी और देवता को नहीं मानेंगे और न उनकी मूर्तियां बनाएंगे या पूजा करेंगे (व्यवस्थाविवरण 4:15-18; 5:7-9)। पुरखों अर्थात अब्राहम, इसहाक और याकूब को मूर्तियों की पूजा करने वालों के रूप में नहीं दिखाया गया। मिस्र की दासता के समय उनकी सन्तान मूर्तियों की पूजा में लग गए हो सकते हैं। उन्होंने मूसा के सीनै पर्वत पर जाने के समय हारून द्वारा बनाए सोने के बछड़े की पूजा की थी (निर्गमन 32:4)। इसके बाद जंगल में इस्राएलियों ने (आमोस 5:25, 26; 1 शमुएल 8:8) जब यहोशू उनका अगुआ था कम से कम एक बार मूर्तिपूजा की (यहोशू 24:20, 23)। न्यायियों के समय में वे मूर्तियों के बहुत पूजा करने वाले बन गए (न्यायियों 2:11-19; 3:19; 10:6; 17:4, 5)। शमुएल ने उनसे बाहरी देवताओं को निकाल देने के लिए कहा (1 शमुएल 7:3)। लगता है कि इस्राएलियों के कनान देश में प्रवेश करने के बाद मूर्तिपूजा उनके बीच में बड़ी तेजी से फैली।

सुलैमान के शासन के अन्तिम दिनों में उसकी पत्नियों ने उसे परमेश्वर की आराधना में मूर्तियों को मिलाने के लिए प्रभावित किया (1 राजाओं 11:3-5)। यारोबाम ने उत्तरी राज्य अर्थात इस्राएल के लिए आराधना के लिए दो बछड़े बनाए। ऐसा उसने इस डर से कि कहीं वे यहूदा, यानी दक्षिणी राज्य में न मिल जाएं जिस पर दाऊद के वंश का शासन था (1 राजाओं 12:26-33)। ऐसा उन्हें यरूशलेम से जाने से रोकने के लिए किया। इसके बाद इस्राएल में मूर्तिपूजा आम हो गई और कुछ ही वर्षों में यहूदा में व्यापक तौर पर की जाने लगी। परमेश्वर ने मूर्तिपूजा की निन्दा करने और लोगों को व्यवस्था के अनुसार परमेश्वर की सच्ची आराधना में वापस लाने के लिए नबी खड़े किए।

बड़े नबी और आराधना

यशायाह, यिर्मयाह, यहेजकेल और दानिय्येल को बड़े नबी इसलिए कहा जाता है क्योंकि उन्होंने अन्य साहित्यिक नबियों अर्थात छोटे नबियों से अधिक लिखा। उन्होंने बाबुल की दासता के आस-पास के काल में यहूदा में भविष्यवाणी की।

यशायाह। सबसे पहला बड़ा नबी यशायाह था। उसने बताया कि पापपूर्ण जीवन ने परमेश्वर की आराधना के सभी प्रयासों को अस्वीकार्य बना दिया था। उसने परमेश्वर की की जाने वाली आराधना में सुधार के लिए परमेश्वर की इच्छा ही नहीं जताई बल्कि उसने धार्मिक जीवन के लिए भी परमेश्वर की इच्छा बताई। बिना पवित्रता के आराधना के प्रति परमेश्वर की नाराज़गी यशायाह

द्वारा इस्राएल की तुलना उन दुष्ट नगरों के लिए कठोर भाषा के इस्तेमाल में देखी जाती है, जिन्हें परमेश्वर ने नष्ट कर दिया था (देखें यशायाह 1:10)। आराधना के उनके प्रयासों के विषय में उसने लिखा:

> मैं उनको सहते सहते उकता गया हूं।
> जब तुम मेरी ओर हाथ फैलाओ,
> तब मैं तुम से मुंह फेर लूंगा;
> तुम कितनी ही प्रार्थना क्यों न करो,
> तौभी मैं तुम्हारी न सुनूंगा;
> क्योंकि तुम्हारे हाथ खून से भरे हैं
> (यशायाह 1:14, 15)।

परमेश्वर को धर्मी लोगों की भेंटों में आनन्द मिलता था (यशायाह 56:7)। वह चाहता था कि उसके लोग बुराई करना छोड़ दें, भलाई और न्याय करना आरम्भ करें और ज़रूरतमंदों की सहायता करें (यशायाह 1:16, 17)। परमेश्वर ने यह नहीं कहा कि उसे बलिदान, सभाएं या पवित्र दिनों को मानना नहीं चाहिए। आराधना में इस्तेमाल किए जाने वाले लोगों के तरीके और ढंग सही थे। इसके बावजूद आराधना करने वालों के दुष्ट जीवनों के कारण उनकी आराधना अस्वीकार्य थी। परमेश्वर सही आराधना उन लोगों से चाहता है, जिनके जीवन सही हों। पाप से भरे जीवनों के कारण परमेश्वर हमारी आराधना को नकार सकता है।

यशायाह द्वारा परमेश्वर के एक दर्शन पर प्रतिक्रिया से हमें परमेश्वर की उपस्थिति की भयावहता को समझने में सहायता मिलनी चाहिए, जिससे हम उसकी आराधना में उसके सामने आने पर अत्यधिक सम्मान दिखाएं (यशायाह 6:1-7)। परमेश्वर के साथ इस सामने से यशायाह को परमेश्वर की पवित्रता और महानता के अलावा परमेश्वर की पवित्रता के सामने अपने पापी होने का अहसास हुआ।

इस्राएल के शत्रुओं के आने वाले विनाश को देखते हुए यशायाह ने परमेश्वर का धन्यवाद किया। लोगों ने उसकी सहायता को देखकर उसकी महिमा करनी थी (यशायाह 25:1-4)। जो लोग परमेश्वर के छुटकारे की प्रतीक्षा कर रहे थे उन्होंने उसकी ओर से मिले उद्धार में आनन्द करना था (यशायाह 25:6-9) और उनके अन्दर से स्तुति के गीत निकलने थे (यशायाह 26:1-4), परन्तु उन्होंने सुन्दर मन्दिर के विनाश के लिए विलाप करना था, जहां वे परमेश्वर की महिमा करते थे (यशायाह 64:10)।

यशायाह ने प्रकट किया कि परमेश्वर केवल दिखाने के लिए मनुष्य की परम्पराओं के अनुसार की गई आराधना के रूप में ही अपनी स्तुति स्वीकार नहीं करेगा। न ही वह उन दिलों से की गई आराधना को मान्यता देगा, जो उससे दूर हैं (यशायाह 29:13)।

नबी ने कहा कि आराधना परमेश्वर के सामर्थी कार्यों के प्रत्युत्तर में अपने आप फूट निकलेगी (यशायाह 43:19-21; 61:10, 11; 65:18, 19; 66:10-14)। उसने इस्राएलियों को परमेश्वर की महिमा करने (यशायाह 52:7-10) और उन बड़े कामों के कारण जो उसने अपने लोगों के लिए किए हैं गाने को कहा (यशायाह 42:10-13)। ऐसी महिमा मसीह के आने पर

आनन्द से उसे ही दी जानी थी (यशायाह 61:1-3) लूका 4:18-21 में यीशु ने इन आयतों को दोहराकर अपने ऊपर लागू किया। यशायाह ने भविष्यवाणी की कि वह समय आएगा जब परमेश्वर का सम्मान निरन्तर अर्थात नये चांद से नये चांद और सब्त से सब्त तक होगा (यशायाह 66:22, 23)।

यिर्मयाह ने यहोवा की आराधना के बारे में तो अधिक नहीं कहा, पर उसने मूर्तिपूजा के विरुद्ध काफी कुछ कहा। उसने कहा कि यहूदा जैसे बन कर इस्राएल ने अपनी मूर्ति सेवा करके परमेश्वर के क्रोध को भड़काया था (यिर्मयाह 5:19; 16:11; 18:15; 19:4, 5)। जो उनके नगरों जितनी ही थी (यिर्मयाह 2:28; 11:10-13)। इतने सारे देवताओं के होने से वे अपने आस पास की मूर्तिपूजक जातियों की मूर्तिपूजा की नकल कर रहे थे। वे परमेश्वर को क्रोधित करने के लिए (यिर्मयाह 7:18) अन्य देवताओं को बलिदान भेंट कर रहे थे और बाहरी देवताओं की पूजा कर रहे थे (यिर्मयाह 8:19; 18:15)। इस कारण यिर्मयाह ने एक प्रश्न पूछा जो बेतुका लगना चाहिए: ''क्या किसी जाति ने अपने देवताओं को बदल दिया ... ?'' (यिर्मयाह 2:11)। उन्होंने यह किया था और अपने ही विनाश के लिए बाल की शपथ खाना सीख लिया था (यिर्मयाह 7:6; 12:16, 17)। परमेश्वर ने सब कुछ बनाया है इसलिए मूर्तियां बनाकर उनकी पूजा करने वाले लोग ''पशु सरीखे ज्ञान रहित हैं'' (यिर्मयाह 10:11-15)।

परमेश्वर के साथ सच्चा सम्बन्ध मानवीय सामर्थ, समझ या ज्ञान पर नहीं बल्कि परमेश्वर को जानने और समझने पर आधारित है (यिर्मयाह 9:23, 24) हर सच्ची आराधना का आधार यही होना चाहिए। यिर्मयाह ने भविष्य को देखा जब परमेश्वर अपने लोगों के भविष्य बहाल कर देगा। फिर उसने कहा कि वे परमेश्वर की भलाई के लिए उसका धन्यवाद करेंगे (यिर्मयाह 33:11)। परमेश्वर की आशिषों को और परमेश्वर को समझना हमें भी उसकी आराधना करने को प्रेरित करने वाला होना चाहिए।

यहेजकेल। मूसा (निर्गमन 3:4-6) और यशायाह (यशायाह 6:1-5) की तरह यहेजकेल ने यह अहसास होने पर कि वह परमेश्वर की उपस्थिति से यह (यहेजकेल 1:28) भय दिखा। परमेश्वर की उपस्थिति भयदायक और खौफ़नाक होनी चाहिए!

अन्य भविष्यवक्ताओं की तरह यहेजकेल ने मूर्तियों की भर्त्सना की। उसने उस विनाश की बात की जो उनके कारण होने वाला था (यहेजकेल 6:4-7; 7:20-27)। यहूदा तो परमेश्वर के मन्दिर में भी मूर्तियां ले आया (यहेजकेल 5:11; 23:38, 39)। लोगों ने लगभग हर जगह झूठे देवता बना लिए और उन्हें अपने बच्चों की बलियां देने लगे (यहेजकेल 16:17-25)। मन्दिर के फाटक पर स्त्रियां तम्मूज़ देवी के लिए रो कर मूर्तियों की पूजा में लगी रहीं (यहेजकेल 8:14)। पुरुष भीतरी आंगन में, सूर्य की पूजा कर रहे थे (यहेजकेल 8:16), उनकी मूर्तियां उनका भाग इस तरह बन गई थीं कि उनके लिए कहा गया उन्होंने उन मूर्तों को अपने मनों में स्थापित कर लिया था (यहेजकेल 14:3-7)। यहेजकेल ने उन्हें चेतावनी दी कि मूर्तियों की पूजा के दण्ड के रूप में वेदियों के आस पास लाशें देख कर वे परमेश्वर को प्रभु मानेंगे (यहेजकेल 6:6, 13; 36:38)।

उनकी बुराई और मूर्तियों की पूजा के कारण परमेश्वर का तेज मन्दिर से उठ गया (यहेजकेल 10:18) जब हमारे जीवन वैसे न हों जैसे होने चाहिए या हम ऐसे आराधना करें जो उसे स्वीकार्य

न हो, परमेवश्वर हमारे जीवनों में से जा सकता है। शमूएल और शाऊल इसके उदाहरण हैं; परमेश्वर उनके पास से चला गया क्योंकि उन्होंने उसकी इच्छा का उल्लंघन किया था (न्यायियों 16:20; 1 शमूएल 16:14)।

दानिय्येल। जब दानिय्येल ने राजा नबूकदनेस्सर के स्वप्न का अर्थ बता दिया तो उसने निष्कर्ष निकाला: ''कि तुम लोगों का परमेश्वर, सब ईश्वरों का ईश्वर, राजाओं का राजा और भेदों का खोलने वाला है, इसलिये तू यह भेद प्रगट कर पाया'' (दानिय्येल 2:47ख)।

दानिय्येल के मित्रों शद्रक, मेशक और अबेदनगो ने मृत्यु सामने देख कर भी नबूकदनेस्सर राजा द्वारा बनवाई विशाल मूर्ति के आगे सिर झुकाकर उसे दण्डवत नहीं किया। इसके कारण उन्हें आग की जलती भट्ठी में फेंक दिया गया। राजा ने यह देखकर उन्हें आग में कुछ नहीं हुआ परमेश्वर को धन्य कहा। उसने घोषणा की ''कि देश-देश और जाति-जाति के लोगों, और भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वालों में से जो कोई शद्रक, मेशक और अबेदनगो के परमेश्वर की कुछ निन्दा करेगा, वह टुकड़े-टुकड़े किया जाएगा, और उसका घर पूरा बनाया जाएगा; क्योंकि ऐसा कोई और देवता नहीं जो इस रीति से बच सके'' (दानिय्येल 3:29ख)।

इस चिह्नों और अद्‌भुत कामों के कारण नबूकदनेस्सर ने परमेश्वर के बारे में निष्कर्ष निकाला:

> उसके दिखाए हुए चिह्न क्या ही बड़े,
> और उसके चमत्कारों में क्या ही बड़ी शक्ति प्रगट होती है!
> उसका राज्य तो सदा का
> और उसकी प्रभुता पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है (दानिय्येल 4:3)।

अन्य अवसरों पर परमेश्वर की सामर्थ देखने के बाद राजा ने ऐसी ही बातें कहीं (दानिय्येल 4:34ख, 35; 6:26ख-27क)। यह समझ आ जाने पर कि परमेश्वर ने कालांतर में क्या किया है वर्तमान में क्या कर रहा है और भविष्य में क्या करेगा। हमें भी ऐसे ही मानना चाहिए।

छोटे नबी और आराधना

अधिकतर छोटे नबियों का बोझ बड़े नबियों वाला ही था-परमेश्वर के लोगों को अपने पापों और मूर्तियों से मुड़कर परमेश्वर की सेवा करने का आग्रह करने की चेतावनी देना। इस समस्या की बात करते हुए उन्होंने परमेश्वर की आराधना से मेल खाती बातें कहीं।

होशे ने लिखा कि परमेश्वर इस्राएल की मूर्तिपूजा को खत्म कर देगा और उन्हें बाल की पूजा के लिए दण्ड देना (होशे 2:9-13; 4:12-14; 13:1-3)। सपन्याह ने उस संदेश को दोहराया (सपन्याह 1:4-18)।

आमोस ने चेतावनी दी कि बलिदान भेंट करने और दशमांश देने से लोग परमेश्वर को स्वीकार्य नहीं हुए (आमोस 4:4-11)। उनमें न्याय और धर्म की कमी के कारण उनकी आराधना में बाधा थी। आमोस के द्वारा परमेश्वर ने घोषणा की:

> मैं तुम्हारे पर्वों से बैर रखता,
> और उन्हें निकम्मा जानता हूं,

और तुम्हारी महासभाओं से मैं प्रसन्न नहीं।
चाहे तुम मेरे लिये होमबलि और अन्नबलि चढ़ाओ,
तौभी मैं प्रसन्न न हूंगा,
और तुम्हारे पाले हुए पशुओं के मेलबलियों की ओर न ताकूंगा।
अपने गीतों को कोलाहल मुझ से दूर करो;
तुम्हारी सारंगियों का सुर मैं न सुनूंगा।
परन्तु न्याय को नदी की नाईं,
और धर्म महानद की नाईं बहने दो (आमोस 5:21-24)।

मीका ने यही सच्चाई बताई:

मैं क्या लेकर यहोवा के सम्मुख आऊं,
और ऊपर रहनेवाले परमेश्वर के साम्हने झुकूं?
क्या मैं होमबलि के लिये
एक एक वर्ष के बछड़े लेकर उसके सम्मुख आऊं?
क्या यहोवा हजारों मेढ़ों से,
वा तेल की लाखों नदियों से प्रसन्न होगा?
क्या मैं अपने अपराध के प्रायश्चित्त में
अपने पहिलौठे को वा अपने पाप के बदले में अपने जन्माए हुए किसी को दूं?
हे मनुष्य, वह तुझे बता चुका है कि अच्छा क्या है;
और यहोवा तुझ से इसे छोड़ और क्या चाहता है,
कि तू न्याय से काम करे,
और कृपा से प्रीति रखे, और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले? (मीका 6:6-8)।

मलाकी ने भविष्यवाणी की कि परमेश्वर अपने लोगों को शुद्ध करेगा तब उनकी भेंटें उसे स्वीकार होंगी (मलाकी 3:3)। उसने इस्राएल को पता चलने दिया कि उनकी आराधना उसे स्वीकार नहीं है क्योंकि वे बेकार चीज़ें लाकर उसके नाम को अपवित्र कर रहे हैं (मलाकी 1:12)। परमेश्वर बेकार वस्तुओं से रिझाया नहीं जाता। वह ऊपरी मन से की गई हमारी सेवा को ग्रहण नहीं करता। वह चाहता है कि उसकी सेवा आनन्द से और स्वेच्छा से की जाए।

सारांश

नबियों ने अब्राहम, इसहाक और याकूब की संतान द्वारा की जा रही मूर्तिपूजा की निन्दा की। उनके द्वारा परमेश्वर ने घोषणा की कि उसके लोगों के पाप के कारण उनकी आराधना ठुकरा दी गई। परमेश्वर बलियों और भेटों को ही नहीं, बल्कि मनों को भी चाहता था। तो उसे आदर दें और उसकी आज्ञाओं के अनुसार जीने की चाह रखें। आज भी यही सच है।

हमें धार्मिकता को अपना लक्ष्य, भलाई को अपने जीने का ढंग बनाकर परमेश्वर के साथ चलने का हर प्रयास करने की आवश्यकता है। परमेश्वर हमारी आराधना तभी स्वीकार करता है जब हम उसका आदर करते और उसकी आज्ञा का पालन करते हैं।